

# सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2023 का एकादश अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् अन्या वुकादिन द्वारा लिखित Release, salvation, uplift and liberation in the classical medieval Vaiśeṣika and Nyāya शोध लेख में न्याय एवं वैशेषिक शास्त्रों में प्रतिपादित मोक्ष के स्वरूप एवं उसकी प्राप्ति के विविध सोपानों को प्रतिपादित किया गया है। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित 'हमारे पूज्य हैं सभी देवता' शोध लेख में भारतीय संस्कृति में बहुदेववाद का महत्त्व बताया है। तत्पश्चात् रमाशंकर गौड़ द्वारा लिखित 'श्राद्ध महत्त्व एवं कर्म प्रक्रिया' लेख के माध्यम से मनुष्य के देव ऋण, पितृ ऋण व मनुष्य ऋण के कर्तव्यों को निर्वाहन करना बताया है। इसी क्रम में गोपीनाथ पारीक 'गोपेश' द्वारा लिखित 'मान्य मनीषी महामहोपाध्याय पं. श्री गोपीनाथ कविराज' लेख में कविराज जी का सम्पूर्ण जीवन चरित्र व वैदुष्य को रेखांकित किया है। लेखों के क्रम में डॉ. मनीषा शर्मा द्वारा लिखित 'श्री विष्णुप्रिया भगवती लक्ष्मी' लेख के माध्यम से लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूपों को बताया है जो कि दीपावली पर्व के संदर्भ में उल्लेखित है। तत्पश्चात् डॉ. शशिकुमार शर्मा द्वारा लिखित 'भट्टारकदेवशक्रविरचितप्रतापकाव्यस्य पञ्चदशसर्गस्य सम्पादनमध्ययनञ्च - समीक्षात्मकभागः' शोध लेख में महाकाव्य के पंचदश सर्गों की समीक्षा की गयी है। आगामी लेख में सुनील कुमार शर्मा द्वारा लिखित 'भारत का सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थालय पोथीखाना-जयपुर' शोध लेख में प्राचीन ग्रन्थालय का वैभव व वैशिष्ट्य बताया गया है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा